दिव्य हिमगिरि

हिमालयी राज्यों की पहली साप्ताहिक पत्रिका

नज़र सब पर

15th ANNIVERSARY

फिर से शुरू हुई चारधाम यात्रा रजिस्ट्रेशन भी खोले गए

चेतावनी और दोस्ती के बीच उलझा ट्रंप-मोदी का रिश्ता, आखिर क्या कहलाएगा?

वर्ष 15 | अंक 16 | मूल्य 15 रुपये | 07-13 सितंबर, 2025

त्यौहारों पर जेब से हल्का हुआ 'बोझ' बाजार भी खुशहाल

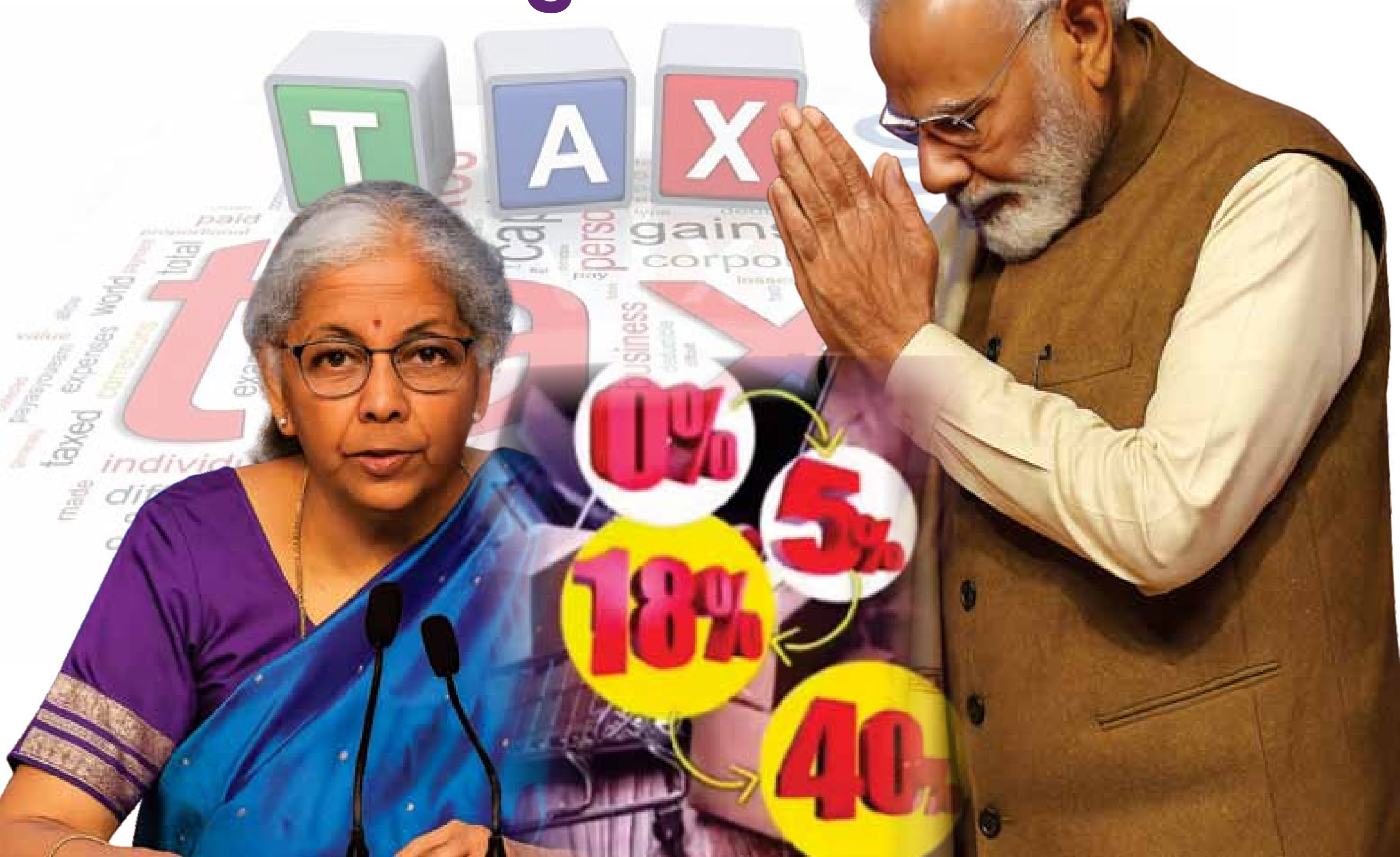

वर्ष 15 | अंक 16

दिव्य हिमगिरि

07-13 सितंबर, 2025

संपादक
कुँवर राज अस्थाना

वरिष्ठ संवाददाता
शंभूनाथ गौतम

संवाददाता
पूनम आर्या

विज्ञापन
सुनील सेमवाल

ग्राफिक डिजायनर
देव भट्ट

संवाददाता
हरिद्वार: डॉ. रजनीश गौतम
पौडी: रत्नमणि भट्ट
कोटद्वार: के.पी. बौंठियाल
रूद्रपुर: हेमचन्द्र बुडलाकोटी
चमोली: मुकेश रावत
रुड़की: श्रीगोपाल नारसन
नैनीताल: शीतल तिवारी
अल्मोड़ा: संजय कुमार अग्रवाल (एड.)
विकासनगर: अजय शर्मा
प्रसार: रमेश सिंह रावत

संपादकीय कार्यालय : 6, म्युनिसिपल रोड, बाला हिसार स्कूल के सामने, डालनवाला देहरादून (उत्तराखंड)
मोबाइल : +91 8433456398, 9410353164
Email: divyahimgiriddn@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक कुँवर बहादुर अस्थाना द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून से मुद्रित तथा 39/7 ई, ई. सी. रोड, (निकट मार्शल स्कूल सीनियर विंग) देहरादून-248001 उत्तराखण्ड से प्रकाशित। संपादक: कुँवर बहादुर अस्थाना*
*(पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तरदायी)

तबाही के मुहाने पर

हिमनदों का तेजी से पिघलना जलवायु परिवर्तन और इसके परिणामस्वरूप आने वाली प्राकृतिक आपदाओं का संकेत है। इससे विनाशकारी बाढ़, जल संकट, समुद्र के स्तर में वृद्धि और पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन जैसे संकट की स्थिति और गंभीर हो सकती है। यह भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है। हिमनदों के पिघलने से पहाड़ों पर नई झीलें बन रही हैं और पहले से बनीं झीलों का दायरा भी बढ़ रहा है, जो कभी भी आसपास के इलाकों में भयंकर तबाही मचा सकती हैं। केंद्रीय जल आयोग की हालिया रपट में कहा गया है कि भारत के हिमालयी क्षेत्र में 432 हिमनद झीलों का आकार चिंताजनक रूप से बढ़ रहा है। इस वर्ष जून के दौरान इन झीलों के जल क्षेत्र में वृद्धि देखी गई है। सवाल यह है कि ये झीलें बढ़ते पानी का दबाव आखिर कब तक झेल पाएंगी? ऐसे में इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि भविष्य में जल का यह अथाह भंडार बड़ी आपदाओं का कारण बन सकता है। इसलिए जरूरी है कि इन हिमनद झीलों का गहन अध्ययन किया जाए और इनकी नियमित रूप से निगरानी की जाए। केंद्रीय जल आयोग की रपट के मुताबिक, लद्दाख, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश के हिमालयी क्षेत्र में हिमनद तेजी से पिघल रहे हैं और वहां बनी झीलों का आकार लगातार बढ़ रहा है। भारत में हिमनद झीलों का कुल क्षेत्रफल वर्ष 2011 में 1,917 हेक्टेयर था, जो वर्ष 2025 में बढ़ कर 2,508 हेक्टेयर हो गया। यानी इन झीलों के क्षेत्रफल में 30.83 फीसद की वृद्धि हुई है, जो आसपास की आबादी के लिए कभी भी प्रलयकारी साबित हो सकती है। अरुणाचल प्रदेश में सबसे अधिक 197 विस्तारित हिमनद झीलें हैं। इसके बाद लद्दाख में 120, जम्मू-कश्मीर में 57, सिक्किम में 47, हिमाचल प्रदेश में छह और उत्तराखंड में पांच हिमनद झीलों का क्षेत्रफल बढ़ा है। देहरादून स्थित वाडिया हिमालय भू-विज्ञान संस्थान और दून विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में भी पाया गया है कि उत्तराखंड में हिमनदों के पिघलने से बन रही झीलों में मिट्टी, मलबा और पत्थर भी जमा हो रहे हैं। प्रदेश में पिछले दस वर्षों में हिमनद झीलों की संख्या 19.2 फीसद तक बढ़ी है। इससे साफ है कि खतरा लगातार बढ़ रहा है। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह बात साफ हो चुकी है कि बढ़ता वैश्विक ताप और जलवायु परिवर्तन हिमनदों के पिघलने का मुख्य कारण है। इसका नतीजा न केवल विनाशकारी बाढ़ के रूप में देखने को मिल सकता है, बल्कि गंभीर जलसंकट जैसी स्थितियां भी पैदा हो सकती हैं। ऐसे में जरूरी है कि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाकर और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देकर सतत विकास के माडल पर ध्यान केंद्रित किया जाए। सरकार, समाज, विज्ञान और जनमानस को मिल कर इस चुनौती से निपटने के उपायों पर काम करना होगा। जिन पर्वतीय इलाकों में हिमनद झीलों का विस्तार हो रहा है, वहां निचले इलाकों में रह रहे समुदायों के लिए वास्तविक समय पर आधारित निगरानी प्रणाली और उपग्रह-आधारित सतर्कता एवं पूर्व-चेतावनी तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए। साथ ही पहाड़ों पर ऐसी गतिविधियों को भी सीमित करने की अत्यंत जरूरत है, जिनसे पर्यावरण को नुकसान हो रहा है, जो भविष्य में किसी बड़ी त्रासदी का कारण बन सकता है।

कुँवर राज अस्थाना

फिर से शुरू हुई चारधाम यात्रा रजिस्ट्रेशन भी खोले गए

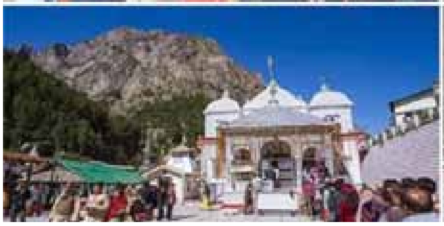

उत्तराखंड की जीवनरेखा मानी जाने वाली चारधाम यात्रा शनिवार से दोबारा शुरू हो गई है। लगातार बारिश और खराब मौसम के चलते सरकार ने 1 से 5 सितंबर तक यात्र पर रोक लगाई थी, लेकिन अब मौसम में सुधार के बाद श्रद्धालुओं के लिए द्वार खोल दिए गए हैं। राज्य सरकार ने यात्रा को सुचारू और सुरक्षित बनाने के लिए रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया भी फिर शुरू कर दी है, जिससे देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालु भगवान बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के दर्शन कर सकेंगे। दिव्य हिमगिरि की रिपोर्ट

उत्तराखंड में शनिवार, 6 सितंबर से चार धाम यात्रा फिर से शुरू हो गई है। सरकार ने खराब मौसम और लगातार बारिश के कारण यात्रा रोकी दी थी। चारधाम यात्रा के लिए रजिस्ट्रेशन भी शुरू किया गया है। उत्तराखंड में लगातार बारिश और भूस्खलन के कारण कई दिनों तक ठप पड़ी चारधाम यात्रा शनिवार से एक बार फिर शुरू हो गई है। साथ ही श्रद्धालुओं की सुरक्षा और व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के लिए यात्रा रूट पर अतिरिक्त पुलिस बल और राहत दलों की तैनाती भी की गई है। शनिवार से चारधाम यात्रा के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया फिर से शुरू कर दी गई है। बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम में दर्शन के लिए पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की संख्या धीरे-धीरे बढ़ने लगी है। प्रशासन का कहना है कि यात्रा के दौरान मौसम की स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है और यात्रियों को सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए हर संभव कदम उठाए जा रहे हैं। उत्तराखंड में पिछले कुछ दिनों से हो रही लगातार बारिश ने पहाड़ी जिलों में जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। कई जगहों पर भूस्खलन और सड़कें टूटने से यातायात बाधित हुआ, जबकि ग्रामीण इलाकों में लोगों को बिजली और पानी की दिक्कतों का सामना करना पड़ा। मौसम विभाग ने भी राज्य के कई हिस्सों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया था, जिसके चलते सरकार ने चारधाम यात्रा को अस्थायी रूप से रोकने का निर्णय लिया था। खराब मौसम के दौरान चारधाम यात्रा पर आए श्रद्धालुओं को बीच रास्ते ही लौटना पड़ा, जिससे उन्हें निराशा का सामना करना पड़ा। खासकर रुद्रप्रयाग, चमोली और उत्तरकाशी जिलों में भारी बारिश और भूस्खलन की घटनाओं ने हालात को और चुनौतीपूर्ण बना दिया। इस बीच राहत दलों ने फंसे हुए यात्रियों और स्थानीय लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। अब मौसम में सुधार होने के बाद यात्रा फिर से शुरू हो गई है।

धामी सरकार ने चार धाम यात्रा मार्ग पर की व्यापक व्यवस्थाएं

चारधाम यात्रा शनिवार से फिर से शुरू हो गई है। धामी सरकार ने यात्रा को बहाल करने के साथ ही श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करने के लिए व्यापक व्यवस्थाएं की हैं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सभी जिलाधिकारियों और पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे यात्रा मार्गों की सुरक्षा, साफ-सफाई और श्रद्धालुओं की सुविधाओं का पूरा ध्यान रखें। इस दौरान यात्रा मार्ग पर स्वास्थ्य शिविर, मेडिकल सहायता केंद्र, पानी और भोजन की पर्याप्त व्यवस्था की गई है। प्रशासन ने भूस्खलन और खराब मौसम की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए रुद्रप्रयाग, चमोली और उत्तरकाशी जिलों में राहत और बचाव दलों की तैनाती भी की है।

मुख्यमंत्री धामी ने हेलीकॉप्टर और नेशनल हाईवे पर फंसे यात्रियों के लिए रेस्क्यू टीमों को सक्रिय रखने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने स्थानीय व्यवसायियों और होटल संचालकों को भी सुरक्षा और सुविधाओं के मानक सुनिश्चित करने का मार्गदर्शन दिया है। चारधाम यात्रा के धार्मिक महत्व के साथ-साथ उत्तराखंड के पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए भी यह यात्रा बेहद महत्वपूर्ण है। प्रशासन ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे मौसम की स्थिति की जानकारी लेकर ही यात्रा करें और सभी दिशा-निर्देशों का पालन करें। उत्तराखंड में चारधाम यात्रा इस वर्ष 30 अप्रैल से श्रद्धालुओं के लिए शुरू हुई थी। यात्रा के पहले ही चरण में हजारों श्रद्धालु बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के दर्शन के लिए निकले। इस दौरान राज्य सरकार ने यात्रा मार्गों पर सुरक्षा, स्वास्थ्य और यातायात व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के लिए विशेष तैयारियां की थीं। हालांकि, इस साल बारिश का पैटर्न अनियमित और भारी रहा। प्रशासन ने श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों की सुरक्षा के लिए प्रभावित मार्गों पर राहत और बचाव दल तैनात किए। अब मौसम में सुधार होने के बाद यात्रा फिर से सुचारू रूप से चल रही है। राज्य सरकार और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सुनिश्चित किया है कि यात्रा के दौरान किसी भी तरह की आपदा या अप्रत्याशित स्थिति से निपटने के लिए सभी सुरक्षा उपाय लागू रहें। उत्तराखंड में पिछले दिनों हुई भारी बारिश ने कई इलाकों में तबाही मचा दी। लगातार वर्षा से भूस्खलन की घटनाएं बढ़ीं और कई राजमार्ग घंटों तक बाधित रहे। पर्वतीय जिलों में कई गांवों का संपर्क टूट गया, जबकि कई जगह घरों और दुकानों को भी नुकसान पहुंचा। प्रशासन की ओर से प्रभावित क्षेत्रों में राहत और बचाव कार्य जारी है।

त्यौहारों पर जेब से हल्का हुआ 'बोझ' बाजार भी खुशहाल

शंभू नाथ गौतम
वरिष्ठ पत्रकार

नवरात्र और दीपावली जैसे बड़े त्योहारों से ठीक पहले मोदी सरकार ने देशवासियों को बड़ी सौगात दी है। केंद्र ने जीएसटी दरों में कटौती कर रोजमर्रा की जरूरतों से लेकर त्योहारों पर खरीदे जाने वाले कई सामानों को सस्ता कर दिया है। लंबे समय से महंगाई और भारी-भरकम टैक्स से परेशान लोगों को अब बड़ी राहत मिलने वाली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त को लाल किले से जीएसटी कम करने का एलान किया था, जो अब 22 सितंबर से पूरे देश में लागू होगा। सरकार के इस कदम से न केवल आम आदमी की जेब पर से बोझ हल्का होगा, बल्कि बाजार में भी रौनक लौट आएगी और खरीदारी का उत्साह दोगुना होगा। जीएसटी स्लैब को सरल बनाकर केवल दो श्रेणियों, 5% और 18% में समाहित किया गया है, जबकि कुछ विशेष वस्तुओं के लिए 40% की दर निर्धारित की गई है। जीएसटी में कटौती से त्योहारों पर खपत बढ़ेगी, व्यापार में तेजी आएगी और जनता को महंगाई से वास्तविक राहत मिलेगी। जीएसटी कम करने के बाद जहां भाजपा के नेताओं ने ऐतिहासिक फैसला बताया वहीं विपक्ष ने सवाल भी उठाए।

नवरात्र और दीपावली जैसे बड़े त्योहारों से ठीक पहले मोदी सरकार ने देशवासियों को बड़ी सौगात दी है। केंद्र ने जीएसटी दरों में कटौती कर रोजमर्रा की जरूरतों से लेकर त्योहारों पर खरीदे जाने वाले कई सामानों को सस्ता कर दिया है। लंबे समय से महंगाई और भारी-भरकम टैक्स से परेशान लोगों को अब बड़ी राहत मिलने वाली है। पीएम मोदी ने विशेष रूप से कहा कि 'हमारी प्राथमिकता' हमेशा जनता की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना रही है। त्योहारों के समय लोगों की खुशी और खरीदारी को बढ़ावा देना हमारा उद्देश्य है। इस फैसले से देशवासियों को राहत मिलेगी और बाजार में उत्साह लौटेगा। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी जीएसटी काउंसिल की बैठक के बाद बयान देते हुए कहा कि यह निर्णय आर्थिक परिस्थितियों और महंगाई की स्थिति को ध्यान में रखते हुए लिया गया है। जीएसटी कम करने के बाद जहां भाजपा के नेताओं ने ऐतिहासिक फैसला बताया वहीं विपक्ष ने सवाल भी उठाए। जीएसटी स्लैब को सरल बनाकर केवल दो श्रेणियों, 5% और 18% में समाहित किया गया है, जबकि कुछ विशेष वस्तुओं के लिए 40% की दर निर्धारित की गई है। नवरात्र के पहले दिन 22 सितंबर से नई दरें पूरे देश में लागू होंगी। इससे न केवल आम आदमी की जेब पर से बोझ हल्का होगा, बल्कि बाजार में भी रौनक लौट आएगी और खरीदारी का उत्साह दोगुना होगा। विशेषज्ञों का मानना है कि जीएसटी में कटौती से त्योहारों पर खपत बढ़ेगी, व्यापार में तेजी आएगी और आम जनता को महंगाई से वास्तविक राहत मिलेगी। वाणिज्य और उद्योग जगत में भी इस फैसले का स्वागत किया जा रहा है। व्यापारियों का कहना है कि खरीदी बढ़ने से त्योहारों के सीजन में कारोबार को मजबूती मिलेगी और उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद सस्ते होंगे। नवरात्र और दीपावली के समय लोग सस्ते और आसानी से उपलब्ध वस्तुओं के साथ त्योहार मना पाएंगे, जिससे देशवासियों के लिए त्योहारों का उत्साह और खुशी दोगुनी होगी। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के जीएसटी पर कटौती किए जाने के एलान के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे सराहनीय कदम बताया

और जनता के लिए इसे बड़े तोहफे के रूप में पेश किया। पीएम मोदी ने कहा कि यह निर्णय सीधे तौर पर आम जनता की जेब पर से बोझ कम करने और त्योहारों के समय लोगों को राहत देने के लिए लिया गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि हमारी सरकार हमेशा जनता के हित में फैसले लेती रही है। जीएसटी में कटौती का यह कदम महंगाई से राहत देने और बाजार में उत्साह लौटाने के उद्देश्य से है। पीएम मोदी ने व्यापारियों और उद्योग जगत को भी भरोसा दिलाया कि नई जीएसटी दरों के लागू होने से बाजार में गतिविधियां बढ़ेंगी और त्योहारों के सीजन में खरीदारी को बढ़ावा मिलेगा।

जीएसटी की दरें कम होने के बाद क्या-क्या चीज सस्ती होंगी

नवरात्रि और दीपावली जैसे बड़े त्योहारों से पहले, मोदी सरकार ने माल और सेवा कर (जीएसटी) दरों में महत्वपूर्ण कटौती की है, जिससे कई सामान सस्ते हो जाएंगे। इसका उद्देश्य आम जनता को राहत देना और बाजार में रौनक लौटाना है। सस्ती होने वाली वस्तुएं। दूध, पनीर, रोटी, आटा, चावल, इन पर पहले 5% जीएसटी लगता था, अब ये पूरी तरह से शून्य (0%) जीएसटी के दायरे में आ गए हैं। मसाले, तेल, घी, चीनी, आचार, नमकीन, बिस्कुट, आइसक्रीम, मिठाई, जूस, फल का रसरू इन पर पहले 18% जीएसटी लगता था, अब ये 5% जीएसटी के दायरे में आ गए हैं। शैम्पू, साबुन, टैलकम पाउडर, टूथपेस्ट, हेयर ऑयल, फेस पाउडर, टूथब्रश। इन पर पहले 18% जीएसटी लगता था, अब ये 5% जीएसटी के दायरे में आ गए हैं। घरेलू उपकरण और इलेक्ट्रॉनिक सामान। एयर कंडीशनर, टीवी, डिशवॉशर, फ्रिज, वॉशिंग मशीन। इन पर पहले 28% जीएसटी लगता था, अब ये 18% जीएसटी के दायरे में आ गए हैं। छोटी कार (पेट्रोल इंजन ≤ 1200 सीसी और लंबाई ≤ 4000 मिलीमीटर, डीजल इंजन ≤ 1500 सीसी और लंबाई ≤ 4000 मिलीमीटर): इन पर पहले 28% जीएसटी लगता था, अब ये 18% जीएसटी के दायरे में आ गए हैं। मोटरसाइकिल (≤ 350 सीसी): इन पर पहले 28% जीएसटी लगता था, अब ये 18% जीएसटी के दायरे में आ गए हैं। सीमेंट। इस पर पहले 28% जीएसटी लगता था, अब ये 18% जीएसटी के दायरे में आ गया है। मार्बल, ग्रेनाइट, ईंटें- इन पर पहले 12% जीएसटी लगता था, अब ये 5% जीएसटी के दायरे में आ गए हैं। कृषि उपकरण। ट्रैक्टर और ट्रैक्टर के पुर्जेरू इन पर पहले 12% जीएसटी लगता था, अब ये 5% जीएसटी के दायरे में आ गए हैं। जीवन और स्वास्थ्य बीमा। इन पर पहले 18% जीएसटी लगता था, अब ये शून्य (0%) जीएसटी के दायरे में आ गए हैं। दवाइयां चिकित्सा उपकरण, थर्मामीटर, मेडिकल ऑक्सीजन, ग्लूकोमीटर: इन पर पहले 12% या 18% जीएसटी लगता था, अब ये 5% जीएसटी के दायरे में आ गए हैं।

जीएसटी कम होने के बाद कुछ वस्तुओं की कीमतें बढ़ सकती हैं

बड़े वाहन जैसे ट्रैक्टर, बसें और लंबी कारों पर पहले 28% जीएसटी लगता था, अब ये 40% जीएसटी के दायरे में आ गए हैं, जिससे इनकी कीमतों में वृद्धि होगी। इसके अलावा, तंबाकू और तंबाकू से जुड़े उत्पादों पर भी नई दरों के अनुसार कर बढ़ा दिया गया है, जिससे इनकी कीमतें महंगी होंगी। कुछ लक्ज़री और विशेष श्रेणी के सामान जिनकी कर दरें पहले 28% या 18% थीं, उनमें भी नए निर्धारण के अनुसार वृद्धि देखने को मिल सकती है। हालांकि आम जनता की दैनिक जरूरत की वस्तुएं जैसे दूध, आटा, रोटी, चावल, मसाले, तेल, घी, साबुन, शैम्पू, और स्वास्थ्य बीमा जैसी वस्तुएं सस्ती होंगी। बड़े वाहन, तंबाकू और विशेष श्रेणी के उत्पादों को छोड़कर अधिकांश चीजों में राहत ही दी गई है, ताकि त्योहारों के समय उपभोक्ताओं को वास्तविक लाभ मिल सके।

जीएसटी में सुधार पर विपक्ष ने देर से लिया गया फैसला बताया

कुछ नेताओं ने इसे चुनावी रणनीति करार दिया है, जबकि अन्य ने इस कदम का स्वागत किया है। 2017 में राहुल गांधी ने जीएसटी को 'गब्बर सिंह टैक्स' कहकर इसे विरोध का पात्र बनाया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि यह कर संरचना जटिल और उपभोक्ता के लिए भारी बोझ बनकर आई है। राहुल गांधी ने जीएसटी कटौती को उनका पूर्व सुझाव बताते हुए इसे सकारात्मक बदलाव माना, लेकिन इसे अत्यधिक देर से आने वाला। अन्य विपक्षी नेताओं ने इस कदम का स्वागत करते हुए भी समय की देरी और राजनीतिक स्वार्थ की संभावनाओं पर सवाल उठाए हैं। कांग्रेस ने इस दर कटौती को राहुल गांधी के जीएसटी 2.0 दृष्टिकोण की जीत बताया। यह विचार 2018 में उनके ट्वीट में स्पष्ट था, जिसमें उन्होंने दो कर स्लैब, 5% और 18% को अपनाने की वकालत की थी। कांग्रेस का कहना है कि केंद्र अब उनके प्रस्तावों का अनुसरण कर रहा है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने आरोप लगाया कि मोदी सरकार ने 'एक ही देश, नौ टैक्स' की प्रणाली बना दी थी, इस बदलाव को वह 'आठ साल की सुस्ती के बाद जागने' जैसा करार देते हैं। उन्होंने राज्य सरकारों को राजस्व की हानि के लिए मुआवजे की मांग भी की है। पी. चिदंबरम ने इस फैसले का स्वागत किया, लेकिन कहा कि यह '8 साल देरी से' लिया गया बदलाव है। उन्होंने वर्तमान जीएसटी डिजाइन को ही शुरू में नहीं लाया जाना चाहिए था, क्योंकि उनसे वर्षों से यह दोष बताते रहे थे। पवन खेड़ा ने कटौती को राहुल गांधी की सलाह मानने से तुलना की और सवाल उठाया कि यह बदलाव लेट क्यों हुआ। ट्वीट में उन्होंने लिखा: 'जब आखिरकार राहुल गांधी की सलाह माननी ही थी', तो इतना समय क्यों लिया। अन्य विपक्षी सांसद व राज्य नेता: विभिन्न विपक्षी दलों ने सरकार को दोष देते हुए कहा कि यह सुधार 'बहुत देर से' किया गया और यह चुनावी लाभ के लिए आया होगा। वे यह भी आशंका जताते हैं कि राज्य फ्लेशन द्वारा प्रभावित हो सकते हैं और आर्थिक संकट की गहराई छिपाने की कोशिश की जा रही है।

मोदी सरकार ने 1 जुलाई 2017 से देश में लागू किया था जीएसटी

मोदी सरकार ने माल और सेवा कर (जीएसटी) को पूरे देश में 1 जुलाई 2017 से लागू किया था। यह भारत की सबसे बड़ी कर प्रणाली सुधार पहल थी, जिसका उद्देश्य विभिन्न प्रकार के अप्रत्यक्ष करों को एक ही कर के अंतर्गत समाहित करना और व्यापार को सरल बनाना था। उस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कहा था कि जीएसटी का उद्देश्य देश में 'एक राष्ट्र, एक कर' का सिद्धांत लागू करना और व्यापारियों के लिए कर ढांचे को आसान बनाना है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण सहित अन्य केंद्रीय मंत्रियों ने इस प्रणाली को सफल बनाने के लिए विशेष प्रयास किए। जीएसटी लागू होने के बाद भारत में अप्रत्यक्ष कर प्रणाली में एक बड़ा बदलाव आया। इससे पहले केंद्र और राज्य अलग-अलग कर लगाते थे, जिससे व्यापारियों और आम जनता को कई स्तरों पर कर चुकाना पड़ता था। जीएसटी के आने से यह प्रक्रिया सरल हुई और देश के विभिन्न राज्यों के बीच माल और सेवाओं के लेन-देन में पारदर्शिता आई। वर्तमान सरकार ने जीएसटी में समय-समय पर सुधार और कटौती भी की है, जनता को राहत देने और बाजार में रौनक बनाए रखने की कोशिश है।

चेतावनी और दोस्ती के बीच उलझा ट्रंप-मोदी का रिश्ता, आखिर क्या कहलाएगा?

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के तेवर इन दिनों बेहद उलझे हुए नजर आ रहे हैं। कभी भारत पर टैरिफ लगाकर कड़ा संदेश देते हैं, तो कभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को हमेशा का मित्र बताकर रिश्तों में भरोसे का इजहार करते हैं। हाल ही में जब पीएम मोदी रूस और चीन के राष्ट्रपतियों संग दिखाई दिए तो ट्रंप ने सख्त चेतावनी भी दी थी, लेकिन 5 सितंबर, शुक्रवार को उनके बयान ने फिर से नया संकेत दिया कि अमेरिका भारत से दूरी नहीं बल्कि निकटता चाहता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा भारत-अमेरिका संबंधों की पुष्टि पर गर्मजोशी से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि वह अमेरिकी राष्ट्रपति की भावनाओं और द्विपक्षीय संबंधों के सकारात्मक मूल्यांकन की गहराई से सराहना करते हैं और पूरी तरह से उनका समर्थन करते हैं। हालांकि, इसी बीच ट्रंप के करीबी मंत्री लगातार भारत को चेतावनी देकर रिश्तों में खटास का माहौल बना रहे हैं। ऐसे में सवाल यह उठता है कि ट्रंप की इस दोस्ती और सख्ती के पीछे असल संदेश क्या है। क्या वह भारत को अपने साथ बनाए रखना चाहते हैं या किसी बड़े दबाव की रणनीति पर काम कर रहे हैं।

शंभू नाथ गौतम

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप इस समय भारत को लेकर असमंजस और दबाव की राजनीति कर रहे हैं। कभी टैरिफ लगाकर भारत को कठोर संदेश देते हैं, तो कभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 'हमेशा का मित्र' बताकर रिश्तों में भरोसा जताते हैं। भारत और अमेरिका के रिश्तों में हाल के दिनों में खटास जरूर आई है, खासकर जब अमेरिका ने भारत पर 50% टैरिफ लगा दिया। इसके बावजूद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ अपनी पुरानी दोस्ती को भुला नहीं पा रहे हैं। वह लगातार बयानों में कभी आलोचना करते हैं तो कभी रिश्तों की खासियत को गिनाते हैं। ट्रंप का कहना है कि मतभेदों के बावजूद मोदी के साथ उनकी मित्रता हमेशा बनी रहेगी। यह बयान न सिर्फ दोनों देशों के संबंधों की अहमियत दिखाता है, बल्कि उस व्यक्तिगत जुड़ाव को भी उजागर करता है, जो राजनीति से परे जाकर दो नेताओं को जोड़ता है। 5 सितंबर, शुक्रवार को ट्रंप ने फिर कहा कि मोदी मेरे हमेशा मित्र रहेंगे, भारत और अमेरिका के रिश्ते मज़बूत बने रहेंगे। लेकिन इस बयान के पीछे का राजनीतिक संदेश कहीं गहरा है, क्योंकि ठीक उसी समय चीन के तियानजिन में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन में पीएम मोदी रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ एक मंच पर दिखे। यही तस्वीर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लिए सबसे बड़ी चिंता का सबब बन गई। अमेरिकी मीडिया और विशेषज्ञों का कहना है कि ट्रंप को डर है कि भारत धीरे-धीरे रूस और चीन की ओर झुक रहा है, और अगर यह नजदीकी बढ़ी तो अमेरिका को एशिया में अपनी रणनीतिक पकड़ ढीली करनी पड़ेगी। ट्रंप ने यहां तक संकेत दिया कि भारत ने रूस को चीन के हाथों खो दिया है, और अगर हालात नहीं बदले तो आने वाले समय में अमेरिका-भारत संबंध भी कमजोर हो सकते हैं। ट्रंप के इस बयान से साफ हो गया है कि व्हाइट हाउस भारत की विदेश नीति पर कड़ी नजर रखे हुए है। एक ओर अमेरिका भारत को अपना 'हमेशा का दोस्त' कहकर साझेदारी का भरोसा दिला रहा है, तो दूसरी ओर यह चेतावनी भी दे रहा है कि रूस और चीन की नजदीकी भारत को भारी पड़ सकती है। वहीं, ट्रंप के कई करीबी मंत्री लगातार भारत पर दबाव बनाने वाली टिप्पणियां कर रहे हैं, जिससे दोनों देशों के बीच तनाव और गहराता जा रहा है। ट्रंप की रणनीति दोहरी है। भारत पर टैरिफ और आर्थिक दबाव डालकर उसे अमेरिका की शर्तों के करीब लाना, और साथ ही दोस्ती का संदेश देकर यह दिखाना कि अमेरिका भारत को खोना नहीं चाहता। लेकिन सवाल यह है कि क्या भारत रूस और चीन के साथ अपने रिश्ते गहराते हुए भी अमेरिका के साथ संतुलन साध पाएगा? या फिर ट्रंप की चेतावनियां आने वाले समय में किसी बड़े भू-राजनीतिक टकराव की भूमिका तैयार कर रही हैं। उल्लेखनीय है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दोस्ती कभी अंतरराष्ट्रीय राजनीति में चर्चा का बड़ा विषय रही है। 2019 में अमेरिका के ह्यूस्टन में आयोजित 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम हो या 2020 में अहमदाबाद में आयोजित 'नमस्ते ट्रंप' रैली, दोनों नेताओं ने मंच साझा कर दुनिया को यह संदेश दिया था कि भारत और अमेरिका के रिश्ते अब नए दौर में प्रवेश कर चुके हैं। लाखों की भीड़ के सामने ट्रंप ने मोदी को 'भारत का चौंपियन' बताया था और मोदी ने ट्रंप को 'भारत का सच्चा मित्र' कहकर संबोधित किया था। उस समय में यह कहा जाने लगा था कि भारत-अमेरिका

के रिश्ते अब तक के सबसे मजबूत दौर में हैं और दोनों नेता निजी रिश्तों की बदौलत कूटनीतिक दूरी को भी कम कर रहे हैं। लेकिन बीते कुछ समय से हालात बदल गए। शुल्क विवाद, रूस-यूक्रेन युद्ध और चीन को लेकर अलग-अलग रुख ने दोनों देशों के बीच खटास पैदा कर दी। आज जब ट्रंप मोदी को फिर से 'हमेशा का मित्र' कह रहे हैं, तो यह सवाल उठना लाज़मी है कि क्या यह रिश्ते उसी भरोसे और गर्मजोशी के दौर में लौट पाएंगे, जैसा कभी हाउडी मोदी और नमस्ते ट्रंप की तस्वीरों में नजर आता था।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के दोस्ती वाले बयान पर पीएम मोदी ने भी दिखाई गर्मजोशी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत-अमेरिका संबंधों की पुष्टि पर गर्मजोशी से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि वह अमेरिकी राष्ट्रपति की भावनाओं और द्विपक्षीय संबंधों के सकारात्मक मूल्यांकन की गहराई से सराहना करते हैं और पूरी तरह से उनका समर्थन करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने भारत-अमेरिका संबंधों को एक व्यापक और वैश्विक रणनीतिक साझेदारी की ओर अग्रसर बताया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने पोस्ट में कहा, राष्ट्रपति ट्रंप की भावनाओं और हमारे संबंधों के सकारात्मक आकलन की मैं गहराई से सराहना करता हूं और उनका पूर्ण रूप से समर्थन करता हूं। भारत और अमेरिका के बीच एक बहुत ही सकारात्मक और दूरदर्शी व्यापक और वैश्विक रणनीतिक साझेदारी है। इससे पहले, वाशिंगटन के साथ संबंधों पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को साप्ताहिक प्रेस वार्ता के दौरान द्विपक्षीय संबंधों के महत्व को रेखांकित किया। रणधीर जायसवाल ने कहा, अमेरिका और भारत के बीच यह संबंध हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे दोनों देश एक व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी साझा करते हैं, जो हमारे साझा हितों, लोकतांत्रिक मूल्यों और लोगों के बीच मजबूत संबंधों पर आधारित है। उन्होंने आगे कहा, इस साझेदारी ने कई बदलावों और चुनौतियों का सामना किया है। हम अपने दोनों देशों द्वारा प्रतिबद्ध ठोस एजेंडे पर केंद्रित हैं और हमें उम्मीद है कि आपसी सम्मान और साझा हितों के आधार पर यह रिश्ता आगे बढ़ता रहेगा।

राष्ट्रपति ट्रंप के बदलते बयान और वैश्विक राजनीति का दबाव

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कभी कठोर और कभी नरम रुख यह दिखाता है कि अमेरिका वैश्विक राजनीति के दबाव से अछूता नहीं रह सकता। चीन और रूस के करीब जाते भारत को लेकर उनकी चिंता साफ झलकती है, लेकिन इसी बीच वह मोदी से अपनी निजी मित्रता पर जोर देकर संतुलन साधने की कोशिश करते हैं। विश्लेषकों का मानना है कि यह दोहरा रुख अमेरिका की कूटनीतिक मजबूरी और चुनावी दबाव दोनों को दर्शाता है। भारत और अमेरिका के बीच रक्षा और तकनीकी सहयोग अभूतपूर्व स्तर पर बढ़ा है, लेकिन आर्थिक मोर्चे पर मतभेद गहराते जा रहे हैं। ट्रंप प्रशासन द्वारा टैरिफ बढ़ाने से व्यापारिक रिश्तों में तनाव है, वहीं दोनों देश इंडो-पैसिफिक रणनीति में साथ खड़े हैं। जानकारों का कहना है कि आने वाले समय में यह संतुलन बनाए रखना ही दोनों देशों की सबसे बड़ी चुनौती होगी। ट्रंप के ये बयान और फैसले कई संदेश छुपाए हुए हैं। एक ओर वह भारत और मोदी के साथ रिश्तों को 'खास' बताकर भारतीय-अमेरिकी वोट बैंक को साधने की कोशिश कर रहे हैं, तो दूसरी ओर चीन-रूस के करीब जाते भारत को लेकर अपनी असहजता भी दिखा रहे हैं। अमेरिका और भारत के बीच रक्षा और तकनीकी सहयोग लगातार मजबूत हो रहा है, लेकिन व्यापारिक मतभेद और भू-राजनीतिक समीकरण रिश्तों में खटास भी पैदा कर रहे हैं।

चीन में पीएम मोदी-पुतिन-जिनपिंग को एकजुट देख तिलमिला गया था अमेरिका

चीन के तियानजिन में शंघाई शिखर सम्मेलन के दौरान पीएम मोदी, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के एक मंच पर आना अमेरिका को रास नहीं आया। वहीं अमेरिका के आर्थिक दबाव के बाद चीन दौरे को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सफल बताया है। तीनों नेताओं की तस्वीर एक साथ होने पर अमेरिका बुरी तरह भड़क गया है। तियानजिन में पीएम मोदी, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग का एक साथ मंच साझा करना और हाथों में हाथ डालकर तस्वीरें देना केवल औपचारिकता नहीं था, बल्कि इसका गहरा राजनीतिक संदेश भी निकला। यही बात अमेरिका को खटक गई। दरअसल, यूक्रेन युद्ध के बाद से अमेरिका लगातार रूस पर आर्थिक दबाव बना रहा है और चाहता है कि दुनिया उसके साथ खड़ी हो। लेकिन भारत रूस से कच्चे तेल की खरीद जारी रखे हुए है। इससे मॉस्को की अर्थव्यवस्था को सहारा मिल रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ट्रेड सलाहकार पीटर नवारो ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रूस और चीन के नेताओं के साथ नजदीकियों पर आपत्ति जताई है। नवारो ने कहा कि पीएम मोदी का शी जिनपिंग और व्लादिमीर पुतिन के साथ खड़ा होना शर्मनाक है। पता नहीं वे क्या सोच रहे हैं। हमें उम्मीद है कि वे समझेंगे कि उन्हें रूस की बजाय हमारे साथ होना चाहिए। वहीं अमेरिका के वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने भारत की रूस से कच्चे तेल की खरीद पर सवाल उठाते हुए कहा कि इससे मॉस्को की जंग मशीन को ताकत मिल रही है। उन्होंने भारत को बुरा खिलाड़ी करार दिया। बेसेंट ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एससीओ बैठक को दिखावा बताया। हालांकि, उन्होंने कहा कि अमेरिका और भारत मजबूत लोकतंत्र हैं और मतभेद सुलझा सकते हैं। सोमवार को चीन के तियानजिन में एससीओ की बैठक हुई। बैठक से पहले फोटो सेशन के दौरान भारतीय पीएम मोदी, चीनी राष्ट्रपति जिनपिंग और रूसी राष्ट्रपति पुतिन एक साथ नजर आए। तीनों नेताओं को एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए भी देखा गया। इसके अलावा पीएम मोदी द्विपक्षीय बातचीत के लिए रूसी राष्ट्रपति पुतिन की कार में ही सवार होकर गए। दोनों के बीच करीब एक घंटे तक गोपनीय बातचीत हुई। इन तस्वीरों को डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ तीनों देशों की एकजुटता के तौर पर पेश किया गया। बैठक में पाकिस्तानी पीएम शहबाज शरीफ भी शामिल हुए। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि चीन की सार्थक यात्रा का समापन हुआ, जहां मैंने एससीओ शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया और विश्व के विभिन्न नेताओं से संवाद किया। साथ ही प्रमुख वैश्विक मुद्दों पर भारत का रुख स्पष्ट किया। मैं शिखर सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए राष्ट्रपति शी, चीन सरकार और जनता का आभारी हूं।

शिक्षक ज्ञानवान ही नहीं चरित्रवान पीढ़ी का निर्माण करें

ललित गर्ग

शिक्षक ही सभ्यता और संस्कृति के असली शिल्पी होते हैं। विज्ञान, तकनीक और राजनीति चाहे जितनी प्रगति कर लें, यदि शिक्षा और शिक्षक दिशा न दें तो मानवता दिशाहीन हो जाती है। इसी कारण 5 सितम्बर को राष्ट्रीय शिक्षक दिवस मनाने की परंपरा आरंभ हुई। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन 5 सितंबर को होता है, जो भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य समाज में शिक्षक के महत्व, उनके योगदान और मार्गदर्शक भूमिका को सम्मान देना है। यह अवसर विद्यार्थियों और समाज को याद दिलाता है कि शिक्षक केवल ज्ञान देने वाले ही नहीं बल्कि आदर्श, प्रेरक और चरित्र-निर्माता भी होते हैं। आज जबकि नया भारत-सशक्त भारत-विकसित भारत निर्मित हो रहा है, तब शिक्षकों की भूमिका अधिक प्रासंगिक हो गयी है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को आंध्र प्रदेश के तिरुत्तनी में हुआ था। वे एक महान दार्शनिक, विद्वान, शिक्षक और राजनेता थे। उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय और कलकत्ता विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में दर्शनशास्त्र पढ़ाया। उनकी पुस्तकें 'इंडियन फिलोशॉफी' 'दी हिन्दू व्यूह ऑफ लाइफ' और 'दी आइडलिस्ट ऑफ लाइफ' विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हुई। वे 1952 से 1962 तक भारत के उपराष्ट्रपति और 1962 से 1967 तक भारत के राष्ट्रपति रहे। उन्हें 1954 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। जब वे राष्ट्रपति बने तो उनके कुछ शिष्यों और मित्रों ने उनका जन्मदिन मनाने की इच्छा व्यक्त की। इस पर उन्होंने विनम्रता से कहा कि यदि आप लोग मेरे जन्मदिन को विशेष रूप से मनाना चाहते हैं तो उसे शिक्षक दिवस के रूप में मनाइए। तब से ही 5 सितम्बर राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। डॉ. राधाकृष्णन का संदेश यही था कि शिक्षक समाज की रीढ़ हैं और उनका सम्मान करना ही वास्तविक राष्ट्र निर्माण है। निश्चित ही शिक्षकों का यह सम्मान केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के भविष्य का घोषणापत्र है।

यह दिवस राष्ट्र को शिक्षा, विज्ञान, शांति एवं प्रगति का सन्देश देने के लिए कृत संकल्पित है। भारत का इतिहास शिक्षा की गौरवमयी परंपरा से जुड़ा है। प्राचीन समय से भारत शिक्षा का बड़ा केन्द्र रहा है और उसने संसार में जगतगुरु की भूमिका निभाई है। नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने भारत को जगतगुरु का दर्जा दिलाया। महान् दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा था- 'व्यक्तित्व-निर्माण का कार्य अत्यन्त कठिन है और यह केवल निःस्वार्थी एवं जागरूक शिक्षक ही कर सकता है।' यह वाक्य हमें याद दिलाता है कि शिक्षक केवल जानकारी देने वाला नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक है। प्राचीन भारतीय दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' रहा है, अर्थात् शिक्षा वही है जो मुक्ति दिलाए। लेकिन आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह 'सा विद्या या नियुक्तये' बन गई है अर्थात् शिक्षा वही है जो नौकरी दिलाए। यही कारण है कि स्कूलों और विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़ने के बावजूद समाज में अपराध और भ्रष्टाचार भी बढ़ रहे हैं।

महात्मा गांधी का यह कथन आज भी प्रासंगिक है-'एक स्कूल खुलेगा तो सौ जेलें बंद होंगी।' परन्तु आज स्थिति इसके विपरीत है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने इस दृष्टिकोण को बदलने का प्रयास किया है। इसमें केवल क्या पढ़ना है पर ही नहीं, बल्कि कैसे पढ़ना है, इस पर भी जोर दिया गया है। आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान, उद्यमशीलता और नैतिकता को शिक्षा के केंद्र में रखा गया है। लेकिन इन सभी का केन्द्रबिंदु शिक्षक ही है। यदि शिक्षक प्रेरणाहीन, निरुत्साहित या असंवेदनशील होंगे तो कोई भी नीति सफल नहीं हो सकती। शिक्षा केवल किताबों और पाठ्यक्रम से नहीं, बल्कि शिक्षक की जीवंत उपस्थिति से सार्थक होती है। पूर्व राष्ट्रपति एवं वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था- 'अगर कोई देश भ्रष्टाचार मुक्त है और सुंदर दिमागों का राष्ट्र बन गया है, तो उसके लिए तीन प्रमुख व्यक्ति जिम्मेदार होंगे-पिता, माता और शिक्षक।' यह कथन शिक्षक के महत्व को सर्वोच्च स्थान पर स्थापित करता है। भारत अमृतकाल की ओर बढ़ रहा है। 2047 तक विकसित भारत का स्वप्न तभी साकार होगा जब हमारे शिक्षक नई पीढ़ी को केवल ज्ञानवान नहीं, बल्कि चरित्रवान भी बनाएंगे।

राष्ट्रीय स्तर पर भी शिक्षा की भूमिका अत्यंत निर्णायक है। नेल्सन मंडेला ने कहा था- 'शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिससे दुनिया बदली जा सकती है।' युद्ध और आतंक के बीज मानव मस्तिष्क में जन्म

लेते हैं, इसलिए बचपन से ही शांति और सह-अस्तित्व के बीज बोने होंगे। बच्चों को अपने देश से प्रेम के साथ विश्व-प्रेम यानी मानवता का पाठ सिखाना होगा, तभी दुनिया से युद्ध, हिंसा, आतंक का खात्मा होगा। भारतीय संस्कृति का 'वसुधैव कुटुम्बकम्' मूल मंत्र इसमें सहायक बन सकता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि शिक्षा और शिक्षक दोनों का स्वरूप धीरे-धीरे मिशन से व्यवसाय की ओर झुकता जा रहा है। ज्ञान की बोली लग रही है, शिक्षक और छात्र के संबंधों में अविश्वास और हिंसा की खबरें बढ़ रही हैं। शिक्षा का व्यापारीकरण रोकने और उसे मानवीय मूल्यों से जोड़ने की जिम्मेदारी सबसे पहले शिक्षकों पर ही आती है।

आज आवश्यकता केवल शिक्षा क्रांति की नहीं, बल्कि शिक्षक क्रांति की भी है। अच्छे पाठ्यक्रम, नई तकनीक और आधुनिक संस्थानों की व्यवस्था तभी सार्थक है जब उनके केंद्र में ऐसे शिक्षक हों, जो छात्रों को प्रेरणा दें, जो उनके सर्वांगीण विकास का माध्यम बनें। खेत, बीज और उपकरण के रहते हुए किसान न हो तो सब बेकार है। उसी प्रकार, विद्यालय, पाठ्यक्रम और तकनीक के रहते हुए यदि शिक्षक नहीं हैं तो सब निरर्थक है। स्वामी विवेकानंद ने भी कहा था- 'सर्वांगीण विकास का अर्थ है हृदय से विशाल, मन से उच्च और कर्म से महान।' शिक्षक ही ऐसे व्यक्तित्व गढ़ते हैं। शिक्षा के बदलते अर्थ ने समाज की मानसिकता को बदल दिया है। यही कारण है कि आज समाज में लोग केवल शिक्षित होना चाहते हैं, सुशिक्षित यानी गुण-सम्पन्न नहीं बनना चाहते। मानो उनका लक्ष्य केवल बौद्धिक विकास ही है। इन स्थितियों से शिक्षकों को बाहर निकलने में नई शिक्षा नीति से बहुत अपेक्षाएं हैं।

भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को केवल साक्षर बनाना नहीं, बल्कि उनमें सामाजिक और भावनात्मक कौशल का विकास करना है। 2030 तक स्कूली शिक्षा के सार्वभौमिकरण का लक्ष्य इसी दृष्टि से रखा गया है। किंतु संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुपलब्धता और बदलते सामाजिक परिवेश की चुनौतियां इस दिशा में बड़ी बाधाएं हैं। इसके बावजूद भारत में शिक्षा की परंपरा इतनी प्राचीन और समृद्ध रही है कि विदेशी विद्वान भी इसकी प्रशंसा करते आए हैं। एफ. डब्ल्यू. टॉमस ने लिखा है- 'भारत में शिक्षा विदेशी पौधा नहीं है। संसार का कोई भी ऐसा देश नहीं है, जहां ज्ञान के प्रति प्रेम का इतने प्राचीन समय में आविर्भाव हुआ हो या जिसने इतना चिरस्थायी और शक्तिशाली प्रभाव डाला हो।' वर्तमान समय में शिक्षक की भूमिका भले ही बदली हो, लेकिन उनका महत्व एवं व्यक्तित्व-निर्माण की जिम्मेदारी अधिक प्रासंगिक हुई है। क्योंकि सर्वतोमुखी योग्यता की अभिवृद्धि के बिना युग के साथ चलना और अपने आपको टिकाए रखना अत्यंत कठिन होता है। फौलाद-सा संकल्प और सब कुछ करने का सामर्थ्य ही व्यक्तित्व में निखार ला सकता है। शिक्षक ही ऐसे व्यक्तित्वों का निर्माण करते हैं।

आर्थिक आपाधापी, आतंक, युद्ध एवं हिंसा के आधुनिक युग में शिक्षकों की भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि वे छात्रों को न केवल ज्ञान देते हैं, बल्कि उन्हें जीवन में जरूरी कौशल भी सिखाते हैं। शिक्षक छात्रों के साथ सहयोग करते हुए उन्हें नैतिक मूल्यों एवं शांतिपूर्ण जीवन के बारे में भी समझाते हैं जो एक अच्छे नागरिक के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिये शिक्षक को ऐसे छात्र तैयार करने होंगे जो वैज्ञानिक-आध्यात्मिक हो, जिनमें बौद्धिकता एवं भावनात्मकता के साथ शारीरिक एवं मानसिक विकास हो। शिक्षक दिवस 2025 का वास्तविक संदेश यही होना चाहिए कि शिक्षक केवल पेशेवर नहीं, बल्कि समाज की आत्मा के निर्माता हैं। भारत यदि पुनः विश्वगुरु बनना चाहता है तो उसे केवल नई शिक्षा नीति ही नहीं, बल्कि निष्ठावान और दूरदर्शी शिक्षकों की फौज तैयार करनी होगी।

धामी सरकार ने चार साल में दी 25 हजार सरकारी नौकरियां

सख्त नकल विरोधी कानून लागू होने के बाद नहीं हुआ एक भी भर्ती परीक्षा पेपरलीक

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के चार साल के कार्यकाल में युवा वर्ग सबसे बड़ा लाभार्थी बनकर उभरा है। इस दौरान रिकॉर्ड 25 हजार युवाओं का चयन सरकारी सेवा में हुआ है। इसी क्रम में शनिवार को जनजाति कल्याण विभाग के राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों में चयनित 15 सहायक अध्यापकों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए।

04 जुलाई 2021 को कार्यभार ग्रहण करने के बाद, धामी सरकार ने युवाओं को रोजगार और स्किल प्रदान करने पर विशेष तौर पर फोकस किया। इस दौरान लोक सेवा आयोग, उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग, चिकित्सा सेवा चयन आयोग के जरिए 25 हजार से अधिक युवाओं को सरकारी सेवाओं में स्थायी रोजगार प्रदान किया जा चुका है। उत्तराखंड लोकसेवा आयोग, अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड के स्तर पर अभी कई विभागों की भर्ती प्रक्रिया जारी है। कुछ मामलों में जल्द ही अंतिम चयन संस्तुति की जाने वाली है, इस कारण कुल स्थायी नौकरियों का यह आंकड़ा अभी और बढ़ने वाला है।

विदेश में रोजगार के मौके

मौजूदा सरकार ने साल 9 नवंबर 2022 से मुख्यमंत्री कौशल उन्नयन एवं वैश्विक रोजगार योजना शुरु की है, इसके लिए युवाओं को आतिथ्य, नर्सिंग, ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करते हुए जर्मनी और जापान में रोजगार प्रदान किया जा रहा है। योजना के तहत अब तक 154 युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है, जिसमें से 37 को जापान में रोजगार प्रदान किया जा चुका है।

सरकार युवाओं के लिए शिक्षा, कौशल के जरिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास कर रही है। हमारा प्रयास है कि उत्तराखंड का पानी और जवानी, यहीं के काम आए। युवा पलायन करने के बजाय, रोजगार प्रदान करने वाले बने।

पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री

पूर्वजो के प्रति श्रद्धाभाव अभिव्यक्त करने का एक पुनीत अवसर!

श्राद्ध पक्ष पूर्वजों के प्रति
नमन का है पुनीत अवसर
पर जीवित उनके रहते हुए
उन्हें भूले रहते हम अक्सर
जीते जी सेवा बडो की
खुश होकर करते जो जन
वे सदा सुख ही भोगते
तनाव मुक्त रहता उनका मन
दिवंगत होने के बाद भी
पितृ लोक से वे देते आशीष
पर जिसने उनको कष्ट दिया
उन्हें कभी नहीं मिलती बख्शीस
माता पिता को जिसने देव माना
श्राद्ध का भाव उसी ने जाना।

डॉ श्रीगोपाल नारसन
एडवोकेट

पितृपक्ष भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा से लेकर अश्विन महीने के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि तक होता है। इस साल पितृ पक्ष की शुरुआत 7 सितंबर, 2025 से होगी और इसकी समाप्ति 21 सितंबर, 2025 को होगी। इस साल भाद्रपद महीने की पूर्णिमा तिथि 07 सितंबर को देर रात 01:41 बजे पर शुरू होगी, जबकि इसका समापन 07 सितंबर 2025 को ही रात 11रू38 बजे पर होगा।

इस बार श्राद्ध सूची निम्नप्रकार रहेगी

रविवार, 7 सितंबर 2025- पूर्णिमा का श्राद्ध
सोमवार, 8 सितंबर 2025- प्रतिपदा का श्राद्ध
मंगलवार, 9 सितंबर 2025- द्वितीय का श्राद्ध
बुधवार, 10 सितंबर 2025- तृतीया का श्राद्ध
बुधवार, 10 सितंबर 2025- चतुर्थी का श्राद्ध
गुरुवार, 11 सितंबर 2025- पंचमी का श्राद्ध
गुरुवार, 11 सितंबर 2025- महाभरणी
शुक्रवार, 12 सितंबर 2025- षष्ठी का श्राद्ध
शनिवार, 13 सितंबर 2025- सप्तमी का श्राद्ध
रविवार, 14 सितंबर 2025- अष्टमी का श्राद्ध
सोमवार, 15 सितंबर 2025- नवमी का श्राद्ध
मंगलवार, 16 सितंबर 2025- दशमी का श्राद्ध
बुधवार, 17 सितंबर 2025- एकादशी का श्राद्ध
गुरुवार, 18 सितंबर 2025-द्वादशी का श्राद्ध
शुक्रवार, 19 सितंबर 2025- त्रयोदशी श्राद्ध
शुक्रवार, 19 सितंबर 2025- माघ श्राद्धा
रविवार, 20 सितंबर 2025- चतुर्दशी का श्राद्ध
रविवार, 21 सितंबर 2025- सर्वपितृ अमावस्या

पितृ पक्ष में सुबह और शाम के समय देवी-देवताओं की पूजा होती है, जबकि दोपहर का समय पितरों को समर्पित होता है। इसलिए श्राद्ध कर्म दोपहर 12:00 बजे किया जाता है। वहीं श्राद्ध कर्म के लिए कुतुप और रौहिण मुहूर्त सबसे शुभ माना जाता है। अगर आप पितृपक्ष में श्राद्ध कर्म करना चाहते हैं तो सुबह उठकर सबसे पहले स्नान करें। इसके बाद आप अपने पितरों का तर्पण करें। श्राद्ध के दिन कौवे, चींटी, गाय, देव, कुत्ते और पंचबलि को भोजन दें, साथ ही ब्राह्मणों को भी भोजन करवाएं।

श्राद्ध पक्ष में ।। ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय।। मन्त्र का वाचन करना चाहिए। जिस दिन श्राद्ध हो उस दिन श्राद्ध की शुरूआत और समापन में ।। देवताभ्य: पितृभ्यश्च महायोगिभ्यन एव च। नम: स्वाहायै स्व धायै नित्ययमेव भवन्युव त।। का वाचन करे।

आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से पितृ पक्ष श्राद्ध आरंभ होता है। इस वर्ष 13 सितंबर से पूर्णिमा को ऋषि तर्पण और श्राद्ध शुरू हो रहा है। 14 सितंबर से पितृ पक्ष श्राद्ध आरंभ होकर 28 सितंबर तक चलेगा। पितृ पक्ष पितरों को याद करने का समय माना जाता है। पितर 2 प्रकार के होते हैं एक दिव्य पितर और दूसरे पूर्वज पितर। दिव्य पितर ब्रह्मा के पुत्र मनु से उत्पन्न हुए ऋषि हैं। पितरों में सबसे प्रमुख अर्यमा हैं जिनके बारे में गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि पितरों में प्रधान अर्यमा वे स्वयं हैं।

दूसरे प्रकार के पितर पूर्वज होते हैं। पितृपक्ष में अपने इन्हीं पितरों को लोग याद करते हैं और इनके नाम से पिंडदान, श्राद्ध और ब्राह्मण भोजन करवाते हैं। कठोपनिषद्, गरुड़ पुराण, मार्कण्डेय पुराण के अनुसार पितर अपने परिजनों के पास पितृपक्ष श्राद्ध के समय आते हैं और अन्न जल एवं आदर की अपेक्षा करते हैं। जिन परिवार के लोग पितृ पक्ष के दौरान पितरों के नाम से अन्न जल दान नहीं करते। श्राद्ध कर्म नहीं करते हैं। उनके पितर भूखे-प्यासे धरती से लौट जाते हैं। इससे परिवार के लोगों को पितृ दोष लगता है। इसे पितृ शाप भी कहते हैं। इससे संतान प्राप्ति में बाधा आती है। परिवार में रोग और कष्ट बढ जाता है।

पितृ पक्ष में जिन तिथियों में पूर्वज यानी पिता, दादा, परिवार के लोगों की मृत्यु हुई होती है उस तिथि को उनका श्राद्ध किया जाता है। श्राद्ध का नियम है कि दिन के समय पितरों के नाम से श्राद्ध और ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। देवताओं की पूजा सुबह में और पितरों की दोपहर में होती है। पूर्वाहणे मातृकं श्राद्ध मराहणे तु पैतृकम। एकोद्दिष्टं तु मध्याहणे प्रातर्वृद्धि निमित्तकम।।

तर्पण विधि- सर्वप्रथम अपने पास शुद्ध जल, बैठने का आसन (कुशा का हो), बड़ी थाली या ताम्रण (ताम्बे की प्लेट), कच्चा दूध, गुलाब के फूल, फूल-माला, कुशा, सुपारी, जौ, काली तिल, जनेऊ आदि पास में रखे। आसन पर बैठकर तीन बार आचमन करें।

ऊँ केशवाय नम:,
ऊँ माधवाय नम:,
ऊँ गोविन्दाय नम: बोलें।

आचमन के बाद हाथ धोकर अपने ऊपर जल छिड़के अर्थात् पवित्र होवें, फिर गायत्री मंत्र से शिखा बांधकर तिलक लगाकर कुशे की

पवित्री (अंगूठी बनाकर) अनामिका अंगुली में पहन कर हाथ में जल, सुपारी, सिक्का, फूल लेकर निम्न संकल्प लें।
अपना नाम एवं गोत्र उच्चारण करें फिर बोले अथ् श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थ देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणम करिष्ये।।
फिर थाली या ताम्र पात्र में जल, कच्चा दूध, गुलाब की पंखुड़ी डाले, फिर हाथ में चावल लेकर देवता एवं ऋषियों का आहवान करें। स्वयं पूर्व मुख करके बैठें, जनेऊ को रखें। कुशा के अग्रभाग को पूर्व की ओर रखें, देवतीर्थ से अर्थात् दाएं हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से तर्पण दें, इसी प्रकार ऋषियों को तर्पण दें।
फिर उत्तर मुख करके जनेऊ को कंठी करके (माला जैसी) पहने एवं पालकी लगाकर बैठे एवं दोनों हथेलियों के बीच से जल गिराकर दिव्य मनुष्य को तर्पण दें, इसके बाद दक्षिण मुख बैठकर, जनेऊ को दाहिने कंधे पर रखकर बाएं हाथ के नीचे ले जाए, थाली या ताम्र पात्र में काली तिल छोड़े फिर काली तिल हाथ में लेकर अपने पितरों का आहवान करें।
ॐ आगच्छन्तु में पितर इमम ग्रहन्तु जलान्जलिम
फिर पितृ तीर्थ से अर्थात् अंगूठे और तर्जनी के मध्य भाग से तर्पण दें।
जो स्वजन अपने शरीर को छोड़कर चले गए हैं चाहे वे किसी भी रूप में अथवा किसी भी लोक में हों, उनकी तृप्ति और उन्नति के लिए श्रद्धा के साथ जो शुभ संकल्प और तर्पण किया जाता है, वह श्राद्ध है। माना जाता है कि सावन की पूर्णिमा से ही पितर मृत्यु लोक में आ जाते हैं और नवांकुरित कुशा की नोकों पर विराजमान हो जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि पितृ पक्ष में हम जो भी पितरों के नाम का निकालते हैं, उसे वे सूक्ष्म रूप में आकर ग्रहण करते हैं। केवल तीन पीढ़ियों का श्राद्ध और पिंड दान करने का ही विधान है।
कहा जाता है कि मृत्यु के देवता यमराज श्राद्ध पक्ष में जीव को मुक्त कर देते हैं, ताकि वे स्वजनों के यहां जाकर तर्पण ग्रहण कर सकें।
श्राद्ध पक्ष में मांसाहार पूरी तरह वर्जित माना गया है। श्राद्ध पक्ष का माहात्म्य उत्तर व उत्तर-पूर्व भारत में ज्यादा है। तमिलनाडु में आदि अमावसाई, केरल में करिकडा वावुबली और महाराष्ट्र में इसे पितृ पंधरवडा नाम से जानते हैं। श्राद्ध स्त्री या पुरुष, कोई भी कर सकता है। श्राद्ध से कराया गया भोजन और पवित्रता से जल का तर्पण ही श्राद्ध का आधार है।
श्राद्ध का अनुष्ठान करते समय दिवंगत पूर्वज का नाम और उसके गोत्र का उच्चारण किया जाता है। हाथों में कुश की पैंती (उंगली में पहनने के लिए कुश का अंगूठी जैसा आकार बनाना) डालकर काले तिल से मिले हुए जल से पितरों को तर्पण किया जाता है। मान्यता है कि एक तिल का दान बत्तीस सेर स्वर्ण तिलों के बराबर है। परिवार का उत्तराधिकारी या ज्येष्ठ पुत्र ही श्राद्ध करता है। जिसके घर में कोई पुरुष न हो, वहां स्त्रियां ही इस परम्परा को निभाती हैं। परिवार का अंतिम पुरुष सदस्य अपना श्राद्ध जीते जी करने के लिए स्वतंत्र माना गया है। संन्यासी वर्ग अपना श्राद्ध अपने जीवन में कर ही लेते हैं।
कहते है कि जब महाभारत के युद्ध में कर्ण का निधन हो गया था और उनकी आत्मा स्वर्ग पहुंच गई, तो उन्हें रोजाना भोजन की बजाय खाने के लिए सोना और गहने दिए गए। इस बात से निराश होकर कर्ण की आत्मा ने इंद्र देव से इसका कारण पूछा। तब इंद्र ने कर्ण को बताया कि आपने अपने पूरे जीवन में सोने के आभूषणों को दूसरों को तो दान किया, लेकिन कभी भी अपने पूर्वजों को दान नहीं दिया। तब कर्ण ने उत्तर दिया कि वह अपने पूर्वजों के बारे में नहीं जानता है और उसे सुनने के बाद, भगवान इंद्र ने उसे 15 दिनों की अवधि के लिए पृथ्वी पर वापस जाने की अनुमति दी ताकि वह अपने पूर्वजों को भोजन दान कर सके। तब से इसी 15 दिन की अवधि को पितृ पक्ष के रूप में जाना जाता है। (लेखक आध्यात्मिक चिंतक व वरिष्ठ पत्रकार है)

मुख्यमंत्री ने किया हेलो हल्द्वानी 91.2 - एफ.एम. रेडियो का लोकार्पण

मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय से हैलो हल्द्वानी 91.2 एफ.एम. सामुदायिक रेडियो मोबाइल एप का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि यह उत्तराखंड के शिक्षा और संस्कृति क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पहल है। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने शिक्षा को दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाने और आधुनिक तकनीक से नवाचार को बढ़ावा देने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि अब सामुदायिक रेडियो हैलो हल्द्वानी एप देश और प्रदेश के प्रत्येक कोने तक पहुँचकर समाज एवं संस्कृति की आवाज़ को और अधिक सशक्त करेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने और आत्मनिर्भरता का आधार है। इसी सोच के तहत प्रदेश के सभी 13 जनपदों में उच्च शिक्षा एवं कौशल विकास केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं, जिससे युवा न केवल शिक्षा प्राप्त करेंगे, बल्कि रोजगारपरक कौशल भी सीख सकेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब विश्वविद्यालय और कौशल विकास केंद्र मिलकर कार्य करेंगे तो उत्तराखंड के युवा नौकरी खोजने वाले नहीं बल्कि नौकरी देने वाले बनेंगे, और यह प्रयास प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करने में राज्य की अहम भूमिका सुनिश्चित करेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने देहरादून में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का एक प्रमुख केंद्र स्थिपित करने का निर्णय लिया है। यह केंद्र न केवल शिक्षा एवं प्रशिक्षण का हब होगा, बल्कि शोध, नवाचार और डिजिटल शिक्षा का भी प्रमुख केंद्र बनेगा।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया और आपदा राहत के लिए मुख्यमंत्री राहत कोष हेतु विश्वविद्यालय की ओर से 01 लाख 49 हजार का चेक मुख्यमंत्री को प्रदान किया।

इस अवसर पर उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत, महानिदेशक यूकॉस्ट प्रो. दुर्गेश पंत, कुलसचिव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय श्री खेमराज भट्ट और विश्वविद्यालय के अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

उत्तराखण्ड ने केंद्र सरकार को सौंपा 5702.15 करोड़ रुपए के आर्थिक पैकेज का प्रस्ताव

प्रमुख सचिव आरके सुधांशु तथा सचिव आपदा प्रबंधन विनोद कुमार सुमन ने एनडीएमए के सदस्य एवं विभागाध्यक्ष राजेंद्र सिंह एवं एनडीएमए के सचिव मनीष भारद्वाज को दिया ज्ञापन

आपदा प्रबंधन विभाग ने इस वर्ष मानसून के दौरान हुई क्षति की प्रतिपूर्ति तथा भविष्य में अवस्थापना संरचनाओं को संभावित नुकसान से बचाने के लिए भारत सरकार से 5702.15 करोड़ रुपये की विशेष सहायता प्रदान करने का अनुरोध किया है। माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर प्रमुख सचिव, मा0 मुख्यमंत्री श्री आरके सुधांशु तथा सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने गुरुवार को नई दिल्ली में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, गृह मंत्रालय भारत सरकार के सदस्य एवं विभागाध्यक्ष श्री राजेंद्र सिंह तथा एनडीएमए के सचिव श्री मनीष भारद्वाज को ज्ञापन सौंपा।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के विभागाध्यक्ष श्री राजेंद्र सिंह तथा सचिव श्री मनीष भारद्वाज ने उत्तराखण्ड को हर स्तर पर सहयोग का आश्वासन दिया है। श्री राजेंद्र सिंह ने कहा कि उत्तराखण्ड राज्य ने इस वर्ष मानसून सीजन में धराली, थराली जैसी भयावह आपदाओं का सामना किया है। राज्य को व्यापक क्षति हुई है, इसमें कोई दोराय नहीं। संकट की इस घड़ी में भारत सरकार राज्य के साथ खड़ी है और एनडीएमए के स्तर पर हर संभव आर्थिक सहयोग राज्य को प्रदान किया जाएगा ताकि आपदा प्रभावितों को हर स्तर पर मदद मिल सके, राज्य जल्द सामान्य स्थिति की ओर अग्रसर हो तथा आपदाओं के प्रभावों को कम करने की दिशा में दीर्घकालिक समाधान किए जा सकें।

सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने बताया कि इस वर्ष प्राकृतिक आपदा से लोक निर्माण विभाग तथा सार्वजनिक सड़कों को लगभग रू0 1163.84 करोड़, सिंचाई विभाग की परिसम्पत्तियों को लगभग रू0 266.65 करोड़, ऊर्जा विभाग को रू0 123.17 करोड़, स्वास्थ्य विभाग की परिसम्पत्तियों को लगभग रू0 4.57 करोड़, विद्यालयी शिक्षा विभाग की परिसम्पत्तियों को 68.28 करोड़, उच्च शिक्षा विभाग की परिसम्पत्तियों को रू0 9.04 करोड़, मत्स्य विभाग को 2.55 करोड़, ग्राम्य विकास विभाग को 65.50 करोड़, शहरी विकास को 04 करोड़, पशुपालन विभाग को 23.06 तथा अन्य विभागीय परिसम्पत्तियों को 213.46 करोड़ तथा इस प्रकार सभी राजकीय विभागों को कुल लगभग रू0 1944.15 करोड़ की सीधे तौर पर क्षति हुई है।

इन परिसम्पत्तियों के पुनर्निर्माण तथा पुनर्प्राप्ति में उपरोक्त धनराशि रू0 1944.15 करोड़ के साथ-साथ परिसम्पत्तियों को बचाने तथा अनेक ऐसी परिसम्पत्तियां, मार्ग, आबादी वाले क्षेत्र तथा अन्य अवस्थापना संरचानाओं को जो आपदा से क्षतिग्रस्त होने की कगार पर हैं, को स्थिर करने के लिये रू0 3758.00 करोड़ की सहायता प्रदान किए जाने का अनुरोध किया गया है। इस प्रकार वर्ष 2025 में हुई आपदा से क्षति के लिये उत्तराखण्ड राज्य को कुल रू0 5702.15 करोड़ की धनराशि की मांग की गई है, ताकि इस धनराशि से आपदा से क्षतिग्रस्त परिसम्पत्तियों की मरम्मत/पुनर्प्राप्ति/पुनर्निर्माण कराया जा सके तथा आपदा से क्षतिग्रस्त होने वाली अवस्थापना संरचनाओं/सार्वजनिक परिसम्पत्तियों/ मार्गों/आबादी वाले क्षेत्रों की सुरक्षा आदि हेतु कार्य कराया जा सके तथा उत्तराखण्ड को आपदा के प्रभाव को न्यूनतम रखा जा सके तथा बहुत बड़ी क्षति से बचा जा सके।

सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने बताया कि प्राकृतिक आपदा से वर्ष 2025 में 01 अप्रैल, 2025 से 31 अगस्त, 2025 के मध्य कुल 79 व्यक्तियों की मृत्यु हुई है, 115 लोग घायल हुए हैं तथा 90 लोग लापता हैं। कुल 3953 छोटे तथा बड़े पशुओं की मृत्यु हुई है। कुल 238 पक्के भवन ध्वस्त हुए हैं, 02 कच्चे भवन ध्वस्त हुए हैं, 2835 पक्के भवन गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हुए हैं तथा 402 कच्चे भवन गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त बहुत बड़ी मात्रा में व्यवसायिक भवन, दुकानें/होटल/होमस्टे, रेस्टोरेंट तथा अन्य संरचनायें क्षतिग्रस्त हुई हैं।

केंद्र से मिल रहा है भरपूर सहयोग- मुख्यमंत्री

मा0 मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि आपदा की इस घड़ी में मा0 प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी तथा गृह मंत्री श्री अमित शाह जी लगातार राज्य के साथ खड़े रहे हैं। केंद्र सरकार ने अब तक हर संभव सहयोग प्रदान किया है, जिसके परिणामस्वरूप राहत एवं बचाव कार्यों को त्वरित गति मिली है। मा0 प्रधानमंत्री जी ने राज्य को आपदाओं से हुई क्षति के संबंध में प्रस्ताव भेजने के निर्देश दिए थे। प्राप्त निर्देशों के क्रम में आपदा से प्रभावित क्षेत्रों में राहत एवं पुनर्वास कार्यों को गति देने के लिए राज्य सरकार ने भारत सरकार से विशेष सहयोग का अनुरोध किया है। हमने आग्रह किया है कि आपदा से हुई भारी क्षति की भरपाई हेतु राज्य को एक विशेष आर्थिक पैकेज प्रदान किया जाए।

राजभवन में "शैलेश मटियानी राज्य शैक्षिक पुरस्कार" सम्मान समारोह हुआ आयोजित

शिक्षक बच्चों में किताबें पढ़ने की आदत विकसित करें और उन्हें खेल, संस्कृति तथा रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ें- राज्यपाल

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और भविष्य को संवारन की शिक्षकों पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी- मुख्यमंत्री

शिक्षक दिवस के अवसर पर शुक्रवार को राजभवन में "शैलेश मटियानी राज्य शैक्षिक पुरस्कार" सम्मान समारोह आयोजित हुआ। समारोह में राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि), मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी और शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने वर्ष-2024 में शैलेश मटियानी राज्य शैक्षिक पुरस्कारों के लिए चयनित 16 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को सम्मानित किया। वर्ष-2024 में चयनित 09 प्रारम्भिक शिक्षक, 05 माध्यमिक शिक्षक, 01 शिक्षक प्रशिक्षक एवं 01 संस्कृत शिक्षक को यह सम्मान प्रदान किया गया है।

राज्यपाल ने पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि यह सम्मान पूरे शिक्षक समाज की मेहनत और तपस्या का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि शिक्षक केवल ज्ञान देने वाले ही नहीं, बल्कि चरित्र, नैतिकता और जीवन मूल्यों के निर्माता होते हैं। राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार तक सीमित नहीं होना चाहिए, अध्यापक बच्चों को संस्कारवान, जिम्मेदार और राष्ट्रभक्त नागरिक बनाने में योगदान दें। राज्यपाल ने कहा कि माता-पिता के बाद गुरु ही बच्चों के सच्चे मार्गदर्शक होते हैं और बच्चों का भविष्य सही दिशा में ले जाने में उनकी सबसे बड़ी भूमिका होती है। उन्होंने विश्वास जताया कि वर्ष 2047 तक भारत को विश्वगुरु बनाने में शिक्षकों का योगदान निर्णायक रहेगा। राज्यपाल ने कहा कि उत्तराखण्ड शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रहा है, इसलिए हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि हम इस परंपरा को और मजबूत बनाएं।

राज्यपाल ने कहा कि आज के इंटरनेट और सोशल मीडिया के दौर में बच्चों को भटकाव से बचाने, उनमें विवेक और सही जीवन-दृष्टि विकसित करने का कार्य भी शिक्षक ही कर सकते हैं। उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे बच्चों में किताबें पढ़ने की आदत विकसित करें और उन्हें खेल, संस्कृति तथा रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ें।

मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि अपने अनुभव, ज्ञान और परिश्रम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और भविष्य को संवारने की शिक्षकों पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है। मुख्यमंत्री ने शैलेश मटियानी राज्य शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त करने वाले शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि शैलेश मटियानी पहाड़ के दर्द और संवेदनाओं को गहराई से समझने वाले कथाकार थे। उन्होंने कथा-साहित्य के साथ-साथ गद्य और सामयिक चिंतन में भी अपनी गहरी छाप छोड़ी। शैलेश मटियानी जी ने भी अपनी कहानियों और उपन्यासों में उत्तराखण्ड के पर्वतीय इलाकों और ग्रामीणों के संघर्ष को शब्दों के माध्यम से पिरोया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी प्राचीन परंपरा से ही गुरु को केवल शिक्षक ही नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पथ प्रदर्शक माना जाता है। वे शिष्यों में राष्ट्रभक्ति, अनुशासन, नैतिकता और संस्कारों के बीज को रोपित करने का कार्य करते हैं। आज इस डिजिटल युग के बदलते दौर में शिक्षकों की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है, जो हमारे बच्चों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ संस्कृति, संस्कार और नैतिक मूल्यों से परिचित कराते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार प्रदेश में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। शिक्षकों के प्रशिक्षण और कौशल विकास के लिए भी विशेष योजनाएं प्रारंभ की हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने का कार्य देश में सबसे पहले उत्तराखण्ड ने किया। राज्य सरकार ने वर्ष 2022 में 'बाल वाटिका' की शुरुआत कर प्रदेश में शैक्षिक क्रांति प्रारम्भ की। उत्तराखण्ड देश का पहला राज्य बन गया है जहाँ बुनियादी शिक्षा के लिए 'राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा' तैयार की गई है। बच्चों में कौशल, उद्यमिता और भारतीय ज्ञान परंपरा को विकसित करने के लिए 'कौशलम कार्यक्रम' भी प्रारंभ किया गया है।

शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने शिक्षा विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों एवं नवाचारों की जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश के 1340 विद्यालयों में वर्चुअल क्लासें और 950 विद्यालयों में स्मार्ट क्लासें शुरू कर दी हैं। उन्होंने कहा कि इस वर्ष सभी जिलों में स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स बनाए जा रहे हैं। इस वर्ष 550 स्कूलों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू कर दिया गया और प्रदेश के 22 हजार प्राथमिक शिक्षकों को टेबलेट प्रदान किए गए है। शिक्षा मंत्री ने बताया कि इस वर्ष शिक्षा विभाग में लगभग 9500 भर्तियां की जा रही है।

कार्यक्रम में सचिव विद्यालयी शिक्षा रविनाथ रामन ने सम्मान समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत किया और सम्मान समारोह की विस्तृत जानकारी दी। अपर सचिव विद्यालयी शिक्षा रंजना राजगुरु ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में स्वर्गीय शैलेश मटियानी के सुपुत्र श्री राकेश मटियानी एवं श्रीमती गीता मटियानी, शिक्षा विभाग के अन्य उच्च अधिकारीगण और पुरस्कार प्राप्त करने वाले शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री महंत देवेंद्र दास जी महाराज
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) दुर्गेश पंत
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) ओंकार सिंह
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. आर. पी. सिंह
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. हरेन्द्र सिंह बिष्ट
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री गौरव गर्ग
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) राम शर्मा
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) मीनू सिंह
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री संजय चौधरी
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री अनुज अग्रवाल
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) सुनील रॉय
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. रुति जुयाल सेमवाल
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री विजय नागर
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री डी. एस. मान
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्रीमती पूजा पोखरियाल
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. अजय कुमार
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री संदीप गुप्ता
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. जेनिफर ए कुमार
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री समर्थ खन्ना
प्रबंधक, द मॉन्टेसरी स्कूल, देहरादून
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं
विनीत
कुँवर राज अस्थाना

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री अर्पित पंजवानी
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री एम. रवि शंकर, आईएएस (रि.)
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. प्रेम कश्यप
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री पी.के. जैन
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) हिमांशु ऐरन
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) गीता जैन
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) अजय सक्सेना
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) आशुतोष सयाना
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) अरुण त्रिपाठी
कुलपति, उत्तराखंड आयुर्वेद विश्वविद्यालय, देहरादून
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं
निवेदक

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) जी. रघुराम
कुलपति, डीआईटी विश्वविद्यालय, देहरादून
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं
निवेदक

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो(डॉ) संदीप विजय
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं
निवेदक

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) संजय जसोला
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं
निवेदक

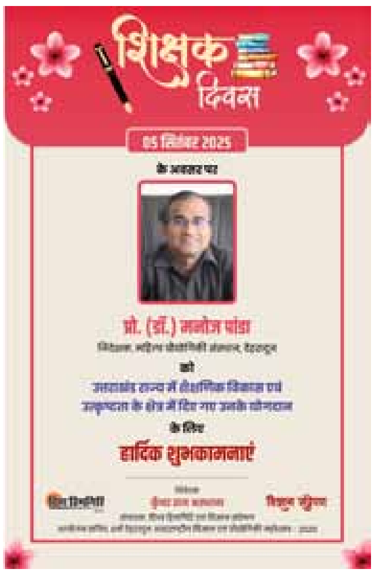
शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) मनोज पांडा
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं
निवेदक

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्रीमती गगनजोत कौर मान
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं
निवेदक

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. ए. एस. उनियाल
संयुक्त निदेशक, उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखंड
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं
निवेदक

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) मनीष प्रतीक
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं
निवेदक

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. हरिओम
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं
निवेदक

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. संदीप कुमार चौधरी
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्रीमती दिव्य सोनी
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) अनीता रावत
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. मोहित नागपाल
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) अमित अग्रवाल
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
प्रो. (डॉ.) नवीन सिंघल
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
डॉ. नृपेन्द्र चौहान
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री अतुल राठौर
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

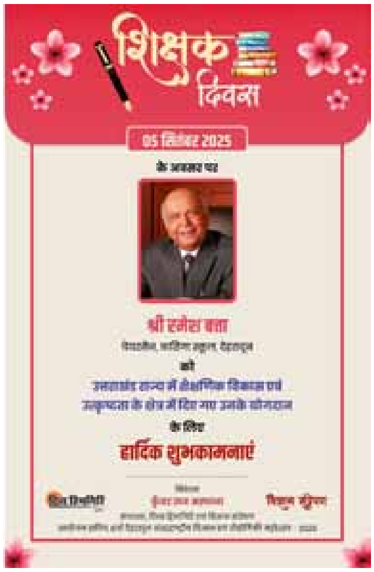
शिक्षक दिवस
05 सितंबर 2025
के अवसर पर
श्री रमेश बत्ता
को
उत्तराखंड राज्य में शैक्षणिक विकास एवं
उत्कृष्टता के क्षेत्र में दिए गए उनके योगदान
के लिए
हार्दिक शुभकामनाएं

जानिए कैसा होगा आपका यह सप्ताह

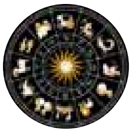

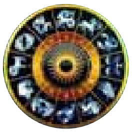

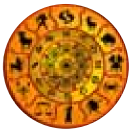

पं. दीपक प्रसाद, शास्त्री (मो. 9557730042)
(ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धर्मिक अनुष्ठान आदि)

मेष राशि- अपनी काम करने की क्षमता पर पूरा विश्वास रखें, आपको सफलता मिलने वाली है। अनुभवी व्यक्ति से बातचीत से कोई पारिवारिक मसला भी हल होगा। पति-पत्नी आपसी तालमेल से घर की व्यवस्था सुखद बनाकर रखेंगे। ब्लड प्रेशर और डायबिटिक लोग अपनी दिनचर्या का विशेष ध्यान रखें। भाग्यशाली रंग- सफेद, भाग्यशाली अंक- 8

वृषभ राशि- अपनी सामाजिक या राजनीतिक छवि को उत्तम बनाकर रखें। मानसिक सुकून पाने के लिए कुछ समय अकेले या किसी धार्मिक स्थल पर जरूर बिताएं। सहयोगियों के फैसले को प्राथमिकता दें, स्वास्थ्य ठीक रहेगा। पर अपने आत्मबल में कमी महसूस करेंगे, जिसका असर आपकी काम करने की क्षमता पर भी पड़ेगा। भाग्यशाली रंग- हरा, भाग्यशाली अंक- 5

मिथुन राशि- आप सकारात्मक व्यवहार से पारिवारिक समस्याओं को हल करेंगे। वाहन का प्रयोग सावधानी से करें, क्योंकि चोट लगने जैसी स्थिति बन रही है। सरकारी नौकरी वाले लोगों के साथ व्यवहार करते समय सावधानी बरतें। एक्टिव बने रहने के लिए व्यायाम, योगा आदि को अपनी दिनचर्या में जरूर शामिल करें। भाग्यशाली रंग- ऑरेंज, भाग्यशाली अंक- 9

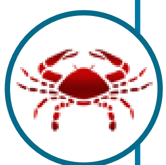

कर्क राशि- अध्यात्म और धर्म से संबंधित कामों में आपका सहयोग रहेगा। बड़े-बुजुर्गो का अनुशासन घर में बना रहेगा। किसी भी मामले में आलस और लापरवाही करना नुकसान दे सकता है। विद्यार्थियों के लिए जल्दी ही नौकरी मिलने के योग बन रहे हैं। अपनी दिनचर्या और खान-पान को पूरी तरह नियंत्रित रखें। भाग्यशाली रंग- हरा, भाग्यशाली अंक- 3

सिंह राशि- समारोह में जाने का अवसर मिलेगा और किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मुलाकात आपके लिए फायदेमंद साबित होगी। इस समय मेहनत ज्यादा और लाभ कम जैसी स्थिति रहेगी। किसी संपर्क सूत्र द्वारा सही ऑर्डर भी मिल सकता है। नसों में खिंचाव की वजह से दर्द रहेगा। व्यायाम और प्राणायाम में भी समय दें। भाग्यशाली रंग- हरा, भाग्यशाली अंक- 3

कन्या राशि- परिवार के किसी सदस्य की उपलब्धि को लेकर घर में खुशी भरा माहौल रहेगा। सकारात्मक गतिविधियों में कुछ समय बिताएं। प्रकृति के पास भी रहें। प्रॉपर्टी से संबंधित व्यवसाय में सही डील हो सकती हैं। शादीशुदा संबंधों में प्रेम और मिठास बनी रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बिल्कुल न बरतें। भाग्यशाली रंग- मेहरून, भाग्यशाली अंक- 4

तुला राशि- पने उद्देश्यों पर ध्यान लगाएं। रिश्तों में सुधार आएगा। चारों तरफ से खुशियां महसूस होंगी। सरकारी नौकरी वाले लोगों को अपने मन मुताबिक कोई उपलब्धि मिलेगी। जगह बदलना भी संभव है। जीवनसाथी और परिवार के लोगों का सहयोग आपके मनोबल को बढ़ाएगा। भाग्यशाली रंग- ऑरेंज, भाग्यशाली अंक- 3

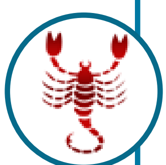

वृश्चिक राशि- व्यस्तता के बावजूद घर परिवार और व्यवसाय में सही तालमेल बनाकर रखेंगे। बच्चों से संबंधित चल रही किसी समस्या का भी समाधान मिलने से राहत रहेगी। बहस करने के बजाय शांति और धैर्य रखना ज्यादा सही है। व्यवसाय में कुछ रुकावटें और चुनौतियां रहेंगी। पारिवारिक वातावरण खुशनुमा बना रहेगा। भाग्यशाली रंग- हरा, भाग्यशाली अंक- 3

धनु राशि- संतान का अनुशासित और सही व्यवहार खुशी और सुकून देगा। आर्थिक स्थिति अभी कुछ धीमी रहेगी। नौकरी में बदलाव से संबंधित योजनाएं जल्दी ही सफल होंगी और मन मुताबिक परिणाम भी मिलेंगे। प्रेम संबंधों में नजदीकियां रहेंगी। अविवाहित लोगों के लिए कोई रिश्ता आने की संभावना है। भाग्यशाली रंग- पीला, भाग्यशाली अंक- 2

मकर राशि- धार्मिक स्थल पर जाने से मानसिक शांति मिलेगी, तरोताजा महसूस करेंगे। अपनी ऊर्जा का भरपूर उपयोग करें। यह समय निवेश करने के लिए आपके पक्ष में है। बच्चों से संबंधित कोई शुभ सूचना मिलने से घर में खुशी का माहौल रहेगा और घर में मेहमानों के भी आने से वातावरण और ज्यादा खुशनुमा बन जाएगा। भाग्यशाली रंग- लाल, भाग्यशाली अंक- 3

कुंभ राशि- सभी काम सोच-समझकर और शांतिपूर्ण तरीके से निपटाने की कोशिश करें। पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, पर आप बेहतरीन तरीके से निभा भी लेंगे। कारोबार से संबंधित लिए गए फैसले सकारात्मक रहेंगे। सर्वाइकल और मांसपेशियों का दर्द परेशान कर सकता है। बादी जैसी तासीर की चीजों का सेवन न करें। भाग्यशाली रंग- केसरिया, भाग्यशाली अंक- 6

मीन राशि- फैसला तुरंत लेने की कोशिश करें, वरना बहुत ज्यादा सोच-विचार करने से महत्वपूर्ण उपलब्धियां आपके हाथ से निकल सकती हैं, बहुत ज्यादा अनुशासन रखना परिवार के लोगों के लिए दिक्कतें पैदा कर सकता है। पारिवारिक तनाव को अपने काम की जगह पर हावी न होने दें। बहुत ज्यादा भावनात्मकता पर कंट्रोल रखें। भाग्यशाली रंग- बैंगनी, भाग्यशाली अंक- 8

R.N.I.: UTTHIN/2010/41629 | Postal Regd. UA/DO/DDN/01/2025-2027

6th DISTF 2025

SCIENCE AND TECHNOLOGY Festival

is coming alive again

12-14 November, 2025

6th DEHRADUN INTERNATIONAL SCIENCE & TECHNOLOGY FESTIVAL 2025

at

Uttarakhand State Council for Science and Technology (UCOST)

Vigyan Dham

Jhajhra, Dehradun

For more Information Visit us at: www.dehradunsciencefest.org